STUDY IQ PUBLICATIONS

SIP+

SUCCESS IN PRELIMS

- प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विस्तृत विषय-सामग्री
- मानक पुस्तकों एवं NCERT का सार
- चार्ट, सारणी एवं आरेख द्वारा सारांशित
- सहज अनुस्मरणीय

आधुनिक भारत का इतिहास

रिवीज़न हेतु सहज एवं सरल

यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु उपयोगी

आधुनिक भारत का इतिहास

रिवीज़न हेतु सहज एवं सरल

संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं के लिए उपयोगी

Study IQ Education Pvt. Ltd.
आधुनिक भारत का इतिहासः रिवीज़न हेतु सहज एवं सरल 1st Edition by Study IQ Publications
Author/Copyright Owner: Study IQ Education Pvt. Ltd.
© Copyright is reserved by Study IQ Education Pvt. Ltd.
Publisher: Study IQ Publications

Printed at: ATOP Printers, Noida

इस पुस्तक के सभी अधिकार सुरक्षित है। सामान्य रूप से पाठ का कोई भाग, आंकड़ा, चित्र, पृष्ठ लेआउट और पुस्तक कवर डिजाइन विशेष तौर पर किसी भी रूप या किसी भी माध्यम जैसे इलैक्ट्रोनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकोर्डिंग या किसी भी सूचना भंडारण और पुनप्राप्ति प्रणाली द्वारा प्रकाशक या लेखक की पूर्व अनुमिति के बिना प्रस्तुत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

इसका प्रकाशन सभी प्रारूपों में, अर्थात पेपरबैक, ई-बुक, या किंडल ईबुक के माध्यम से, इस शर्त के अधीन बेचा जा सकता है कि इस पुस्तक को प्रकाशक या लेखक की पूर्व अनुमिति के बिना व्यापार के माध्यम से या अन्यथा, उधार, पुनर्विक्रय, फोटोकॉपी, किराए या अन्य तरीकों से प्रसारित नहीं किया जाएगा।

इसके प्रकाशन/पुस्तक/ईबुक/किंडल ईबुक में निहित जानकारी Study IQ (स्टडी आईक्यू) की संपादकीय टीम के सामूहिक प्रयासों का नतीजा है। ऐसा विश्वास है कि इसमें शामिल सभी जानकारी सटीक और विश्वसनीय है। इस पुस्तक में जानकारी का स्रोत सहयोगियों से प्राप्त है। जिनके अनुभवी कार्यो और मुद्रांकन का इस्तेमाल करने से पहले जांच की जाती है। फिर भी, न तो Study IQ और न ही संपादकीय टीम इस प्रकाशन में प्रदान की गई जानकारी की सत्यता की गारंटी देती है। इस जानकारी के इस्तेमाल से होने वाली किसी भी हानि के लिए ये जिम्मेदार नहीं होगें।

प्रस्तावना

प्रिय अभ्यर्थियों,

सिविल सेवा की प्रारम्भिक परीक्षा जल्द ही आयोजित होने वाली है। इस परीक्षा को सिविल सेवक बनने के आपके लक्ष्य की दिशा में पहला पड़ाव माना जाता है। प्रारम्भिक परीक्षा, यूपीएससी सीएसई का सबसे अधिक प्रतिस्पर्धी चरण है, और इसलिए, इसमें सफल होने के लिए निरंतर अध्ययन, रिवीजन और परीक्षण करना अनिवार्य है। वर्तमान प्रतियोगिता के दौर में यूपीएससी की प्रारम्भिक परीक्षा का प्रयास करने वाले 100 अभ्यर्थियों में से सामान्यत: केवल 1 अभ्यर्थी ही इसमें सफल हो पाता है। बढ़ती प्रतिस्पर्धा को देखते हुए, इसमें सफल होने के लिए विशेष रूप से तैयार की गई अध्ययन सामग्री की नितांत आवश्यकता है। सरल अध्ययन सामग्री वर्तमान समय की मांग है जो यूपीएससी पाठ्यक्रम के त्वरित एवं प्रभावी तरीके से रिवीजन में मदद करती हो।

हमारी यूपीएससी सीएसई पुस्तकों के लिए अभ्यर्थियों द्वारा प्राप्त उत्साहजनक प्रतिक्रिया से प्रेरणा लेते हुए, हम प्रारंभिक परीक्षा की तैयारी को सरल बनाने की दिशा में एक कदम और आगे बढ़ रहे हैं। अभ्यर्थियों की मांग को पूरा करने के लिए, स्टडी आईक्यू प्रकाशन आपको 'एसआईपी + स्टेटिक रिवीजन सिम्पलीफाइड बुकलेट्स' के पहले संस्करण को प्रस्तुत करते हुए अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है।

एसआईपी + पुस्तिका श्रृंखला को रणनीतिक रूप से 2 भागों में विभाजित किया गया है; एसआईपी + स्टेटिक रिवीजन सिम्पलीफाइड और एसआईपी + करंट रिवीजन सिम्पलीफाइड। यूपीएससी का पाठ्यक्रम व्यापक है, जो सूचनाओं की अधिकता और प्रश्नों की जटिलता के कारण और भी कठिन हो जाता है। ये पुस्तिकाएं विशेष रूप से उन समस्याओं और चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए बनाई गई हैं, जिनका सामना अभ्यर्थियों को उनकी प्रारंभिक तैयारी के दौरान करना पड़ता है। यह अभ्यर्थियों से संबंधित आवश्यक मुद्दों को सुलझाने और प्रारम्भिक परीक्षा से पहले उनके अमूल्य समय को बचाने का एक सार्थक प्रयास है।

पुस्तिका की प्रमुख विशेषताएं:

- यूपीएससी के वर्तमान रुझानों एवं पैटर्न के अनुरूप, अद्यतन पाठ्यसामग्री, रिवीजन के लिए उपयुक्तता के जरिए इस पुस्तिका का उद्देश्य आपकी तैयारी को सटीक और प्रासंगिक बनाना है।
- यूपीएससी प्रारम्भिक परीक्षा की आवश्यकताओं की पूर्ति इसका केंद्रबिंदु है।
- हमने यह सुनिश्चित किया है कि पाठ्यसामग्री सुस्पष्ट और रिवीजन के लिए बेहतर हो; ताकि अभ्यर्थी प्रमुख अवधारणाओं और तथ्यों को सीख सकें और उसे याद रख सकें।
- StudyIQ टीम पूरी ईमानदारी और विनम्रता के साथ आपको परीक्षा की तैयारी हेतु शुभकामनाएं देती है, और आशा करती है कि यह पुस्तिका आपकी इस यात्रा में महत्वपूर्ण रूप से सहयोगी होगी।

विषय सूची

अध्याय 1 : यूरोपियों का आगमन 1

अध्याय 2 : अठारहवीं सदी का भारत 7

अध्याय 3 : भारत में ब्रिटिश विस्तार और समेकन / सुदृढ़ीकरण 17

अध्याय 4 : 1857 से पहले अंग्रेजों के खिलाफ जनप्रतिरोध 30

अध्याय 5 : 1857 का विद्रोह 40

अध्याय 6 : औपनिवेशिक भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन 45

अध्याय 7 : भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन की शुरुआत 59

अध्याय 8 : बंगाल का विभाजन और स्वदेशी आंदोलन 64

अध्याय 9 : प्रथम विश्व युद्ध के लिए राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया 71

अध्याय 10 : क्रांतिकारी गतिविधियों का उदय 77

अध्याय 11 : गांधीजी का आगमन और भारत में जन आंदोलन की शुरुआत 82

अध्याय 12 : नई विचारधाराओं और शक्तियों का उदय 91

अध्याय 13 : साइमन कमीशन 97

अध्याय 14 : सविनय अवज्ञा आंदोलन और गोलमेज सम्मेलन 101

अध्याय 15 : द्वितीय विश्व युद्ध के लिए राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया 114

अध्याय 16 : भारत छोड़ो आंदोलन, आईएनए और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद का परिदृश्य 118

अध्याय 17 : स्वतंत्रता और विभाजन 127

अध्याय 18 : भारत में देशी रियासतें 130

अध्याय 1

यूरोपियों का आगमन

परिचय

1707 में **औरंगजेब की मृत्यु के बाद,** दिल्ली अब एक मजबूत केंद्र के रूप में कार्य नहीं कर रही थी। इससे यूरोपीय लोगों के लिए, जो मूल रूप से व्यापार के लिए आए थे, देश में बसना और शासन करना आसान हो गया। इतिहास में इस अवधि ने चार प्रमुख यूरोपीय देशों- पुर्तगाल, डच, ब्रिटेन और फ्रांस के आगमन को चिह्नित किया। भारत आने वाले सभी यूरोपीय लोगों में, ब्रिटेन सबसे शक्तिशाली के रूप में उभरा, जिसने भारत को 200 वर्षों तक सफलतापूर्वक उपनिवेश बना के रखा।

प्राचीन व्यापार मार्ग

मध्य युग के दौरान यूरोप और भारत तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच व्यापार कई मार्गों से होता था।

- **पहला मार्ग फारस की खाड़ी** के साथ-साथ समुद्र द्वारा और वहाँ से भूमि पर इराक और तुर्की से होते हुए, और फिर समुद्र के द्वारा वेनिस और जेनेवा तक था।
- एक दूसरा मार्ग लाल सागर से होता हुआ और फिर जमीन से होते हुए मिस्र में एलेक्जेंड्रिया तक जाता था और वहाँ से समुद्र के द्वारा वेनिस और जेनेवा जाता था।
- तीसरा मार्ग बाल्टिक सागर से होकर जाता था। यह बाल्टिक के लिए एक थलचर मार्ग को कवर करता है, जो भारत के उत्तर पश्चिम सीमांत, मध्य एशिया और रूस के दर्रों से होकर गुजरता था।

एशिया में इस व्यापार का अधिकांश भाग अरब व्यापारियों और नाविकों/जहाजियों द्वारा किया जाता था, जबकि इसके भूमध्यसागरीय और यूरोपीय भाग पर इटली वालों का लगभग एकाधिकार था।

नये व्यापार मार्ग की खोज

व्यापार मार्गों की खोज में पहला कदम पुर्तगाल और स्पेन द्वारा उठाया गया था। पुर्तगाली और स्पेन के व्यापारियों और नाविकों (उनकी सरकारों द्वारा प्रायोजित और नियंत्रित) ने भौगोलिक खोजों के एक महान युग की शुरुआत की।

- 1494 में, स्पेन का कोलंबस भारत पहुँचने के लिए निकला और इसके बजाय उसने अमेरिका की खोज की।
- 1498 में, पुर्तगाल के वास्को डी गामा ने यूरोप से भारत के लिए एक नए और पूर्णतः समुद्री मार्ग की खोज की। वह केप ऑफ गुड होप के माध्यम से अफ्रीका के चारों ओर नौकायन करता हुआ आया और कालीकट पहुँचा।

यूरोपीय लोगों को वैकल्पिक मार्ग खोजने के लिए प्रेरित करने वाले कारक थे:

कांस्टेंटिनोपल/ कुस्तुनतुनिया पर कब्जा: 1453 में ओटोमन तुर्कों द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल पर कब्जा करने से भारत के साथ यूरोपीय व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

अरब व्यापारियों का एकाधिकार: लाल सागर मार्ग और भारत के स्थल मार्ग पर अरबों का एकाधिकार था।

इतालवी व्यापारियों का विरोध: इतालवी, पश्चिमी यूरोपीय व्यापारियों के द्वारा पारंपरिक भूमि और समुद्री मार्ग के माध्यम से भारत के साथ व्यापार किये जाने का विरोध कर रहे थे।

यूरोपीय बाजारों में भारतीय वस्तुओं की उपलब्धता में गिरावट: जैसे-जैसे भारत में सीधी पहुँच घटती गई, वैसे-वैसे मसालों, कालीनों, रेशम और विभिन्न कीमती पत्थरों जैसी भारतीय वस्तुओं की आसान पहुँच प्रभावित हुई, जिनकी यूरोप में काफी माँग थी।

© Study IQ Publications

यूरोपीयों का भारत में आगमन

यूरोपीय शक्ति	प्रमुख तथ्य
पुर्तगाली	• भारत के साथ सीधे व्यापार की इच्छा के साथ भारत में कदम रखने वाले पहले यूरोपीय पुर्तगाली थें। • उन्होंने मुंबई, दमन और दीव, गुजरात, मैंगलोर, कन्नूर, कोचीन और कालीकट के महत्त्वपूर्ण बंदरगाहों को नियंत्रित किया। • उन्होंने सैन थोम (चेन्नई में) और नागपट्टिनम / नागपत्तनम् (1554) (अब तमिलनाडु में) में पूर्वी तट पर सैन्य चौकियों और बस्तियों को नियंत्रित किया। • 16वीं शताब्दी के अंत में हुगली (पश्चिम बंगाल में) में एक समृद्ध पुर्तगाली बस्ती विकसित हुई। • गोवा, भारत में प्राथमिक पुर्तगाली बस्ती और प्रशासनिक मुख्यालय था। • पुर्तगाल से भारत में कीमती धातुओं का व्यापार, और भारत से पुर्तगाली में मसालों का व्यापार 1506 से एक शाही एकाधिकार (पुर्तगाली क्राउन / ताज) था। • पुर्तगालियों ने मालाबार क्षेत्र से और बाद में कनारा (भारत के दक्षिण-पश्चिम तट में क्षेत्र) से बड़ी मात्रा में मसाले खरीदे-और 16वीं शताब्दी के मध्य तक एंटवर्प में और उसके बाद अनुबंध बिक्री के माध्यम से लिस्बन में बेचे। • 1564 के बाद, पुर्तगाली क्राउन काली मिर्च के व्यापार पर अपना एकाधिकार बनाए रखने में असमर्थ था और इसे निजी व्यापारिक हितों के साथ साझा किया। **पुर्तगाली शाही अधिकारी:** • पेड्रो अल्वारेज कैब्राल (1500-1501) - उन्होंने 1500 में कालीकट में एक पुर्तगाली फैक्टरी (अर्थात् व्यापारिक केंद्र) की स्थापना की। • वास्को डी गामा (1501) - 1501 में वास्को की दूसरी यात्रा के कारण कन्नूर में एक व्यापारिक केंद्र अर्थात् फैक्टरी की स्थापना हुई। धीरे-धीरे कालीकट, कन्नूर और कोचीन पुर्तगालियों के महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र बन गए। **पुर्तगाली गवर्नर:** • **फ्रांसिस्को डी अल्मीडा (1505-1509):** वह पुर्तगाल के राजा द्वारा भारत में नियुक्त पहला पुर्तगाली गवर्नर था। उसने ब्लू वाटर पॉलिसी (नौसेना श्रेष्ठता की नीति) शुरू की, जो भारत में एक क्षेत्रीय साम्राज्य स्थापित करने के बजाय समुद्र पर वर्चस्व का समर्थन करती है और उनकी गतिविधियों को विशुद्ध रूप से वाणिज्यिक लेनदेन तक सीमित करती है। • **अल्फोंसो डी अल्बुकर्क (1509-1515):** उसने विजयनगर साम्राज्य की मदद से वर्ष 1510 में बीजापुर के सुल्तान से गोवा पर कब्जा कर लिया। इसके बाद, गोवा भारत में प्राथमिक पुर्तगाली बस्ती बन गया। उसने मालाबार और लाल सागर के होर्मुज में जीत हासिल की और किले (गढ़) बनाए। उसने समुद्री मार्गों के सभी निकासों की कमान संभालकर हिंद महासागर पर पुर्तगाल के सामरिक नियंत्रण को सुनिश्चित किया। इसको पूर्व दिशा में पुर्तगाली सत्ता का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। ◆ उसने 1515 में भारत में अपने शासित क्षेत्रों में सती प्रथा को समाप्त कर दिया। ◆ उसने तम्बाकू और काजू जैसी नई फसलों की शुरुआत की। ◆ उसने नारियल की जटा से निर्मित जहाज की रस्सियों और डोरियों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए नारियल की नई किस्मों को भी पेश किया। • **नीना-डी-कुन्हा (1529-1538):** उसने प्रशासनिक मुख्यालय कोचीन से गोवा स्थानांतरित कर दिया। उसने हुमायूँ (1534) के खिलाफ लड़ाई में मदद करके गुजरात के बहादुर शाह से बसीन (वसई) को हासिल किया। उसने गुजरात के शासक बहादुर शाह को धोखे से एक पुर्तगाली जहाज पर बुलाकर (1537) मार डाला। उन्होंने हुगली में अपने मुख्यालय के साथ बंगाल में पुर्तगाली बस्तियों की स्थापना की **नोट:** • **कार्टेज प्रणाली (Cartaze System)** भारतीय जहाजों से पैसा वसूलने के लिए पुर्तगालियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली एक विधि थी। इस प्रणाली के तहत, पुर्तगालियों द्वारा आरक्षित नहीं किए गए गंतव्य के लिए नौकायन करने वाले सभी भारतीय जहाजों के कप्तानों को गोवा के वायसराय से पास (पार-पत्र) या लाइसेंस (अनुज्ञप्ति-पत्र) (passes or license) खरीदने के लिए बाध्य किया गया था। पास के अभाव में, उनके जहाजों को पुर्तगालियों द्वारा जब्त किया जा सकता था। **पुर्तगाली और मुगल:** • अकबर के शासनकाल में पुर्तगालियों को हुगली नदी के तट पर एक शाही फरमान (1579) मिला था। अकबर ने गोवा के दो विद्वान पुजारियों, रोडोल्फो एक्वाविया और एंटोनियो मोनसेरेट (जेसुइट फादर्स) को भी आमंत्रित किया, जिन्हें फतेहपुर सीकरी (1580) में अकबर के दरबार में भेजा गया था। • शाहजहाँ की अवधि के दौरान, पुर्तगालियों ने मुमताज महल की दो दासियों को घेर लिया, जिससे शाहजहाँ नाराज हो गया और जून 1632 में हुगली पर मुगलों का कब्जा शुरू हो गया। हुगली 3 महीने बाद मुगलों के कब्जे में आ गया। 17वीं शताब्दी के मध्य तक, पुर्तगालियों ने अंततः भारत छोड़ दिया। लेकिन उनकी तीन बस्तियाँ, अर्थात् गोवा, दीव और दमन 1961 तक उनके हाथों में रहीं। इस तरह, पुर्तगाली न केवल भारत आने वाले पहले थे, बल्कि भारत छोड़ने वाले अंतिम भी थे।

© Study IQ Publications

यूरोपीय शक्ति	प्रमुख तथ्य
	पुर्तगालियों का प्रभाव • पुर्तगालियों ने मालाबार और कोंकण तट पर ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार करना शुरू किया। संट फ्रांसिस जेवियर, फादर रुडोल्फ और फादर मोनसेरेट जैसे मिशनरियों ने ईसाई धर्म के प्रचार में अग्रणी भूमिका निभाई। सन् 1540 में गोवा के सभी मंदिरों को नष्ट कर दिया गया था। ◆ मिशनरियों ने पश्चिमी तट पर स्कूलों और कॉलेजों की शुरुआत की, जहाँ शिक्षा देशज भाषा में दी जाती थी। • भारत में प्रिंटिंग प्रेस (छपाई मशीन) पुर्तगाली लेकर आए। बाइबिल कन्नड़ और मलयालम भाषा में छपने लगी। पुर्तगाली भारत में कई प्रकार की फसलें, फल और सब्जियाँ लेकर आए, जो उन्होंने विभिन्न देशों से प्राप्त की थीं। इनमें शामिल हैं- आलू, शकरकंद, तंबाकू, मक्का, भिंडी, मिर्च, अनानास, पपीता, चीकू, लीची, संतरा, काली मिर्च, मूंगफली, काजू, बादाम आदि।
डच	• द स्टेट्स-जनरल, डच गणराज्य के राष्ट्रीय शासी निकाय, ने Verenigde Oost-Indische Compagnie या डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की। • डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1602 ईस्वी में एक चार्टर द्वारा की गई थी। ◆ इस चार्टर ने डच ईस्ट इंडिया कंपनी को 21 वर्षों के लिए पूर्व में व्यापार करने का एकाधिकार प्रदान किया था। ◆ चार्टर ने डच ईस्ट इंडिया कंपनी को युद्ध करने, संधियों को समाप्त करने, प्रदेशों का अधिग्रहण करने और किलेबंदी करने का अधिकार भी दिया। • **भारत में डच बस्तियाँ और व्यापारिक डिपो:** ◆ **पश्चिम भारत :** सूरत (1616), भड़ौच (भरूच), खंभात और अहमदाबाद। ◆ **दक्षिण भारत :** केरल में कोचीन, मद्रास में कराईकल और नागपट्टम और आंध्र प्रदेश में बिमलीपट्टम और मसूलीपट्टम। 1609 ई. में उन्होंने पुलीकट में एक कारखाना खोला। ◆ **मध्य और पूर्वी भारत :** उत्तर प्रदेश में आगरा, बिहार में पटना और बंगाल प्रांत में चिनसुरा, बालासोर, बारानगर और कासिमबाजार। • 1658 में उन्होंने सीलोन को भी पुर्तगालियों से जीत लिया। • वे भारत से नील, कच्चा रेशम, सूती वस्त्र, शोरा और अफीम का निर्यात करते थे। **भारत में डचों का पतन:** • डचों की मुख्य दिलचस्पी भारत में नहीं, बल्कि जावा, सुमात्रा और इंडोनेशियाई द्वीपों के स्पाइस (मसाला) द्वीपों में थी जहाँ मसालों का उत्पादन होता था। इस प्रकार, उन्होंने अपने भारतीय क्षेत्रों के विस्तार या भारत में अधिक क्षेत्रों के अधिग्रहण पर अधिक ध्यान केंद्रित नहीं किया। • भारत में डच समेकित शक्ति के लिए अंतिम झटका 1759 में बेदरा/हुगली की निर्णायक लड़ाई में अंग्रेजों द्वारा लगाया गया था।
अंग्रेज/ ब्रिटिशर्स	• 1599 में, पूर्व के साथ व्यापार करने के लिए एक संयुक्त स्टॉक कंपनी के रूप में 'इंग्लिश एसोसिएशन ऑफ द मर्चेंट एडवेंचरर्स' का गठन किया गया था। कंपनी को लोकप्रिय रूप से ईस्ट इंडिया कंपनी के रूप में जाना जाता था। • कंपनी को 31 दिसंबर 1600 को महारानी एलिजाबेथ द्वारा एक रॉयल चार्टर (शाही इजाजतनामा) और पूर्व में व्यापार करने का विशिष्ट विशेषाधिकार प्रदान किया गया था। **ईस्ट इंडिया कंपनी का विस्तार :** **पश्चिमी भारत:** • ईस्ट इंडिया कंपनी 1608 में विलियम हॉकिन्स के नेतृत्व वाले जहाज हेक्टर में भारत में सबसे पहले सूरत पहुँची। • 1609 में, कंपनी ने कैप्टन हॉकिन्स को सूरत में एक "फैक्टरी" (माल या सामान का भंडार गृह) स्थापित करने की अनुमति प्राप्त करने के लिए मुगल सम्राट जहाँगीर के दरबार में भेजा था। शुरुआत में इसे ठुकरा दिया गया। ◆ 1612 में अंग्रेजों ने स्वाल्ली के युद्ध में पुर्तगाली बेड़े को हरा दिया और अंततः सूरत में एक फैक्टरी स्थापित की। ◆ 1613 में, जहाँगीर ने ईस्ट इंडिया कंपनी को सूरत में अपनी स्थायी व्यापारिक चौकी/फैक्टरी स्थापित करने की अनुमति देने वाला फरमान (एक शाही आदेश) जारी किया। • 1615 में, सर थॉमस रो (इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ प्रथम के एक प्रतिनिधि राजनयिक) मुगल दरबार पहुँचे और मुगल साम्राज्य के सभी हिस्सों में व्यापार करने और फैक्टरियाँ स्थापित करने के लिए एक शाही फरमान प्राप्त करने में सफल रहे। ◆ तदनुसार, अंग्रेजों ने आगरा, अहमदाबाद और भड़ौच में कारखाने स्थापित किए। • 1662 में पुर्तगालियों ने बॉम्बे द्वीप इंग्लैंड के राजा चार्ल्स द्वितीय को एक पुर्तगाली राजकुमारी से शादी करने के उपलक्ष में दहेज के रूप में दिया था। ◆ 1668 में, कंपनी ने अपने राजा चार्ल्स द्वितीय से 1668 में प्रति वर्ष 10 पाउंड के किराए पर बंबई प्राप्त किया। ◆ बंबई की किलेबंदी की गई और जल्द ही पश्चिमी तट पर कंपनी के मुख्यालय के रूप में सूरत को हटा (प्रतिस्थापित कर) दिया गया। **दक्षिणी भारत:** • ईस्ट इंडिया कंपनी 1611 के बाद से ही भारत के कोरोमंडल तट पर मसूलीपट्टम में उपस्थित थी। • 1639 में, फ्रांसिस डे ने मद्रास शहर की स्थापना की और फोर्ट सेंट जॉर्ज का निर्माण किया। • मद्रास ने 1682 में पूर्वी व्यापार के मुख्यालय के रूप में बैंटम का स्थान ले लिया। • 1690 में, कोरोमंडल तट पर कुड्डालोर के पास फोर्ट सेंट डेविड, मराठों द्वारा कंपनी को बेच दिया गया था। 18वीं शताब्दी में यह किला/फोर्ट दक्षिणी भारत में ब्रिटिश सत्ता का दूसरा केंद्र बना।

© Study IQ Publications

यूरोपीय शक्ति	प्रमुख तथ्य
	पूर्वी भारतः ● पूर्वी भारत में, ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1633 में उड़ीसा में अपनी पहली फैक्टरियाँ खोली थीं। ● 1651 में इसे बंगाल में हुगली में व्यापार करने की अनुमति दी गई थी। ◆ इसने जल्द ही पटना, बालासोर, ढाका और बंगाल और बिहार के अन्य स्थानों पर व्यापारिक केंद्र (फैक्टरियाँ) खोले। ● 1698 में, ईस्ट इंडिया कंपनी के एजेंट जॉब चर्नोक ने तीन गाँव सुतानाती, गोविंदपुर और कलिकाता खरीदे, जो समय के साथ कलकत्ता शहर में विकसित हुए। यह जॉब चर्नोक द्वारा किलेबंद किया गया था, जिसने इसका नाम अंग्रेजी राजा विलियम III के नाम पर फोर्ट विलियम रखा था। **नोटः** ● 1717 में, कंपनी ने मुगल बादशाह फर्रुखसियर से 1691 में दिए गए विशेषाधिकारों की पुष्टि करने वाला एक फरमान प्राप्त किया और उन्हें गुजरात और दक्कन तक विस्तारित कर दिया गया। ● आखिरकार, भारत के समुद्र-तट के साथ-साथ अंग्रेजों ने जिन फैक्टरियों और व्यापारिक केंद्रों की स्थापना की, उन्हें बॉम्बे, मद्रास और कलकत्ता नामक तीन प्रेसीडेंसी के तहत समूहित किया गया। ● **1757 में प्लासी का युद्ध और 1764 में बक्सर का युद्ध** के बाद, कंपनी एक राजनीतिक शक्ति बन गई। भारत 1858 तक ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के अधीन था और उसके बाद यह ब्रिटिश क्राउन/ताज/तख्त के प्रत्यक्ष प्रशासन के अधीन आ गया।
डेन/डेनिश	● **डेन / डेनिश** डेनमार्क से आए थे और वे भारत की धरती पर कदम रखने वाली एक छोटी औपनिवेशिक शक्ति थे। ● डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1616 में हुई थी और उन्होंने 1620 में तंजौर (तमिलनाडु) के पास ट्रांक्यूबार / ट्रांकेबोर में व्यापारिक चौकियाँ स्थापित कीं। ● 1755 में, उन्होंने बंगाल में सेरामपुर (श्रीरामपुर) के पास फ्रेदेरिक्स्नगोरे नामक एक बस्ती की स्थापना की। ◆ अंग्रेजों द्वारा इस पर दो बार कब्जा कर लिया गया, डेनिश उपनिवेश एक व्यावसायिक उद्यम के रूप में विफल रहा। ● 1777 में, डेनमार्क की कंपनी दिवालिया हो गई और सेरामपुर को डेनिश क्राउन को स्थानांतरित कर दिया गया। ◆ हालाँकि, सेरामपुर भारत में मिशनरियों के लिए एक सुरक्षित आश्रय बन गया और मिशनरियों की सांस्कृतिक और शैक्षिक गतिविधियों के लिए अपार प्रसिद्धि अर्जित की। ● 1845 में, डेनमार्क ने सेरामपुर को ब्रिटेन को सौंप दिया, इस प्रकार बंगाल की लगभग 150 वर्षों की डेनिश उपस्थिति समाप्त हो गई।
फ्रांसीसी	● 1664 में, जीन-बैप्टिस्ट कोलबर्ट ने फ्रांसीसी (फ्रेंच) ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की। ● कंपनी ने 1668 में फ्रांसिस केरोन या फ्रैंको कैरो के तहत सूरत में अपनी पहली फैक्टरी (व्यापारिक केंद्र) स्थापित की और दूसरी फैक्टरी एक साल बाद मसूलीपट्टनम में स्थापित की। ● व्यापार के उद्देश्य से भारत आने वाले अंतिम यूरोपीय फ्रांसीसी थे। ● वलिकोंडापुरम के गवर्नर शेर खान लोदी (बीजापुर सुल्तान के अधीन) ने 1673 में फ्रेंकोइस मार्टिन (मसूलीपट्टनम फैक्टरी के निदेशक) को फ्रांसीसियों के बसने के लिए एक क्षेत्र के रूप में प्रदान किया। ● फ्रांसीसियों ने 1674 में पांडिचेरी की स्थापना की। ◆ 1701 में पांडिचेरी को भारत में फ्रांसीसी बस्तियों की राजधानी बनाया गया था। ● माहे, कराईकल, बालासोर और कासिम बाजार फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी के अन्य कुछ महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र थे।

आंग्ल-फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता

भारत में आंग्ल / अंग्रेज-फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता की जड़ें फ्रांस और इंग्लैंड के बीच पारंपरिक प्रतिद्वंद्विता थीं। यह ऑस्ट्रियाई उत्तराधिकार के युद्ध के साथ शुरू हुई और सप्तवर्षीय युद्ध के साथ समाप्त हुई। इस बीच, भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ हिस्सों में राजनीतिक स्थिति ने विदेशियों को अपने प्रभाव का विस्तार करने का अवसर दिया। विस्तार और राजनीतिक प्रभाव हासिल करने की इस हड़बड़ी के परिणामस्वरूप भारत में विदेशी प्रतिद्वंद्वियों के बीच युद्ध हुए।

कर्नाटक के युद्ध

आंग्ल-फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता ने, तीन कर्नाटक युद्धों का रूप लेते हुए, अठारहवीं शताब्दी में दक्षिण भारत पर ब्रिटिश विजय के इतिहास में मील का पत्थर निर्मित किया। अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए यह आवश्यक था कि वह इस क्षेत्र से फ्रांसीसियों का सफाया कर दे।

कर्नाटक के युद्ध	
कर्नाटक का प्रथम युद्ध (1740-1748)	प्रथम कर्नाटक युद्ध यूरोप में आंग्ल-फ्रांसीसी युद्ध का विस्तार था जो ऑस्ट्रियाई उत्तराधिकार युद्ध के कारण हुआ था। **तात्कालिक कारण:** बार्नेट के नेतृत्व में अंग्रेजी नौसेना ने फ्रांस को भड़काने के लिए कुछ फ्रांसीसी जहाजों को जब्त कर लिया। **युद्ध का घटनाक्रम:** डुप्ले (1741 से पांडिचेरी (पुडुचेरी) के फ्रांसीसी गवर्नर) ने एक अन्य फ्रांसीसी बस्तियों और मॉरीशस (फ्रांस के द्वीप) से मदद माँगी। मॉरीशस के फ्रांसीसी गवर्नर एडमिरल ला बोरडोनैस / बूर्डोने (La Bourdonnais) के नेतृत्व में फ्रांसीसी नौसेना का एक बेड़ा बचाव के लिए आया। 1746 में, फ्रांसीसियों ने मद्रास पर कब्जा कर लिया। फ्रांसीसी सेना के कैप्टन पैराडाइज ने अडयार नदी के तट पर स्थित सेंट थोम में महफूज खान के नेतृत्व वाली अनवरुद्दीन (अंग्रेजों के एक सहयोगी) की सेना को हरा दिया। **युद्ध का अंत:** युद्ध समाप्त हो गया जब 1748 में ए-ला-शापेल की संधि पर हस्ताक्षर करने के साथ ऑस्ट्रियाई उत्तराधिकार का युद्ध समाप्त हो गया। इस संधि की शर्तों के तहत, मद्रास को अंग्रेजों को वापस सौंप दिया गया, और फ्रांसीसियों को बदले में उत्तरी अमेरिका में अपने प्रदेश मिल गए।
कर्नाटक का द्वितीय युद्ध (1749-1754)	डुप्ले (Dupleix) ने अंग्रेजों को हराने के लिए स्थानीय राजवंशीय विवादों में हस्तक्षेप करके दक्षिणी भारत में अपनी शक्ति और फ्रांसीसी राजनीतिक प्रभाव बढ़ाने का सोचा। **तात्कालिक कारण:** 1748 में चंदा साहब ने कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन के खिलाफ साजिश रचनी शुरू कर दी। समानांतर रूप से इसी दौरान हैदराबाद में नवाब आसफ जाह की मृत्यु के बाद उसके बेटे नासिर जंग और पोते मुजफ्फर जंग के बीच गृहयुद्ध छिड़ गया। इस अवसर का लाभ उठाने के लिये डुप्ले (फ्रांसीसी) हस्तक्षेप करना चाहता था और दक्षिण भारत में अपनी पकड़ मजबूत करना चाहता था, उसने कर्नाटक में चंदा साहब और हैदराबाद में मुजफ्फर जंग का समर्थन किया। अंग्रेजों ने नासिर जंग और अनवरुद्दीन के दावों का समर्थन किया। **युद्ध का घटनाक्रम और परिणाम :** 1749 में, अम्बूर के युद्ध के दौरान, चंदा साहब, मुजफ्फर जंग और फ्रांसीसियों की संयुक्त सेना ने वेल्लोर में अनवरुद्दीन की सेना से लड़ाई की और उसे हरा दिया। अनवरुद्दीन मारा गया। मुजफ्फर जंग दक्कन का सूबेदार बन गया। चंदा साहब कर्नाटक और पांडिचेरी (अस्सी गाँव) के आसपास के इलाकों के नवाब बने। मसूलीपट्टनम (मुजफ्फर जंग द्वारा) सहित ओडिशा तट पर कुछ क्षेत्रों को फ्रांसीसियों को सौंप दिया गया था। डुप्ले को कृष्णा नदी से कन्याकुमारी तक पूर्वी तट पर मुगल साम्राज्य का मानद गवर्नर बनाया गया था। हैदराबाद में फ्रांसीसियों के हितों को सुरक्षित करने के लिए बूसी (मार्क्विस डी बूसी, कैस्टेलनौ) के नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना को तैनात किया गया था। क्षेत्र में बढ़ती फ्रांसीसी शक्ति को कमजोर करने के लिए, अंग्रेजों ने मुहम्मद अली का समर्थन करने का फैसला किया। रॉबर्ट क्लाइव (बाद में बंगाल के गवर्नर बने) ने ध्यान भटकाने की युक्ति के रूप में कर्नाटक की राजधानी अर्काट पर हमला किया। इसे अर्काट की घेराबंदी कहा जाता है, जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिशर्स की विजय हुई। इसके बाद कई लड़ाइयाँ लड़ी गई और उनमें से एक में चंदा साहब मारे गए। इस प्रकार मुहम्मद अली को कर्नाटक के नवाब के रूप में स्थापित किया गया। 1754 में पांडिचेरी की संधि के साथ युद्ध समाप्त हो गया।
कर्नाटक का तृतीय युद्ध (1756-1763)	1756 में, फ्रांस और ब्रिटेन के बीच सात साल के युद्ध (सप्तवर्षीय युद्ध) के रूप में जाना जाने वाला संघर्ष तब शुरू हुआ जब ऑस्ट्रिया ने साइलेसिया (1756-63) को फिर से हासिल करने की माँग की। फ्रांस और ब्रिटेन एक बार फिर विरोधी पक्षों पर थे। **युद्ध का घटनाक्रम और परिणाम :** इस संघर्ष के दौरान पहली दुश्मनी 1758 में अंग्रेजों के खिलाफ फ्रांसीसियों द्वारा शुरू की गई थी। काउंट डी लाली के नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना ने सेंट डेविड के ब्रिटिश किले (चेन्नई के पास कोरोमंडल तट पर) और विजयनगरम पर कब्जा कर लिया था। अंग्रेजों ने इसका जवाब दिया और मसूलीपट्टनम में डीश्आचे के नेतृत्व वाले फ्रांसीसी बेड़े को भारी नुकसान पहुँचाया। वर्ष 1760 में तमिलनाडु के वांडीवाश (वंदावासी) में एक निर्णायक लड़ाई लड़ी गई। अंग्रेजी सेना के जनरल आयरकूट ने काउंट डी लाली की सेना को पूरी तरह से भगा दिया और बुसी को कैदी के रूप में पकड़ लिया। जनवरी 1761 में आत्मसमर्पण करने से पहले आठ महीने तक पांडिचेरी का लाली द्वारा बचाव किया गया था। **परिणाम:** माहे और जिंजी की हार के बाद, फ्रांसीसी शक्ति भारत में अपने निम्नतम स्तर पर आ गई। लाली को बंदी बनाकर लंदन भेज दिया गया। बाद में उसे फ्रांसीसियों को दे दिया गया, जिन्होने 1766 में उस पर मुकदमा चलाया और फिर उसे मार डाला। पेरिस की शांति की संधि (1763) पर ब्रिटिश और फ्रांसीसियों के बीच हस्ताक्षर किए गए और तीसरा कर्नाटक युद्ध अंत में समाप्त हुआ। भारत में फ्रांसीसी कारखानों को फ्रांसीसियों को बहाल कर दिया गया और उन्हें अब उन्हें किलेबंदी करने की अनुमति नहीं दी गई।

फ्रांसीसियों की हार और अंग्रेजों की जीत के कारण

- **सरकारी नियंत्रण:** फ्रेंच इंडिया कंपनी सरकार द्वारा प्रायोजित उद्यम थी; इसलिए इसमें स्वायत्तता का अभाव था और यह फ्रांसीसी राष्ट्र के हित का प्रतिनिधित्व नहीं करती थी।
- **सत्ता के आसन:** फ्रांसीसियों का प्रभाव केवल पांडिचेरी में था, जबकि अंग्रेजों का प्रभाव विविध सामरिक स्थानों पर था।
- **नौसेना की ताकत:** फ्रांसीसी बेहतर और संगठित अंग्रेजी नौसेना के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर सके।
- **वाणिज्य के स्थान पर विजय की नीति:** फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने व्यावसायिक हितों को अधीनस्थ कर लिया और क्षेत्रीय विस्तार पर ध्यान केंद्रित किया। जबकि अंग्रेज यह नहीं भूले कि वे प्राथमिक रूप से एक व्यापारिक संस्था थे।

© Study IQ Publications